9.1.2018 या किसी बुधवार

जब विश्वामित्र ने लक्ष्मी को आबद्ध किया

बात उन दिनों की है, जिन दिनों ऋषि विश्वामित्र साधना में लम्बे अरसे से लगे हुए थे। उनकी जिन्दगी में एक ऐसी भी दौर आया जब वे अभावों से पीड़ित हो उठे।

ऐसे ही समय में एक दिन उनके एक शिष्य ने आकर बताया - "गुरुदेव! आज आश्रम में खाद्यान्न खत्म हो चला है। गाँव के लोग अकाल पीड़ित होने के कारण भूखे मर रहे हैं। कहीं से भिक्षा उपलब्ध नहीं हो रही है। भिक्षा के लिए गए आश्रम के ब्रह्मचारी खाली हाथ लौट आए हैं।

विश्वामित्र को बड़ा क्रोध आया। उनको आशा भी नहीं थी, कि उन्हें अपने जीवन में कभी ऐसा भी समय देखना पड़ेगा। वे एक राजा के पास गए। राजा आसन से खड़ा हो विश्वामित्र के श्री चरणों में साष्टांग प्रणाम किया। आवभगत के बाद विश्वामित्र ने अपने आने का प्रयोजन बताया, तो राजा हाथ जोड़कर खड़ा हो गया - 'हे ऋषिवर! मेरे राज्य में आवश्यक कर के रूप में ली गई सम्पत्ति के अलावा कोई और सम्पत्ति नजर आती हो तो बतावें, मैं आपको सहर्ष दे दूँगा।

लेकिन प्रजा के खून-पसीने का पैसा मैं बिना प्रजा की अनमुति के आपको भला कैसे दे सकता हूँ और फिर मैं स्वयं प्रजा का सेवक होने के नाते यह अनाधिकार चेष्टा कैसे कर सकता हूँ। उस धन की अधिकारिणी मेरी प्रजा है। मै तो मात्र उसका संरक्षक, पालक और सेवक हूँ। बात एकदम सत्य थी। विश्वामित्र निरुत्तर हो वापस लौट गए।

इस प्रकार के कई राजाओं के पास गए, लेकिन हर जगह से वे निराश ही लौट आए। उनकी वहां आवभगत तो बहुत की गई, मगर धन देने में हर किसी ने अपनी असमर्थता दिखा दी।
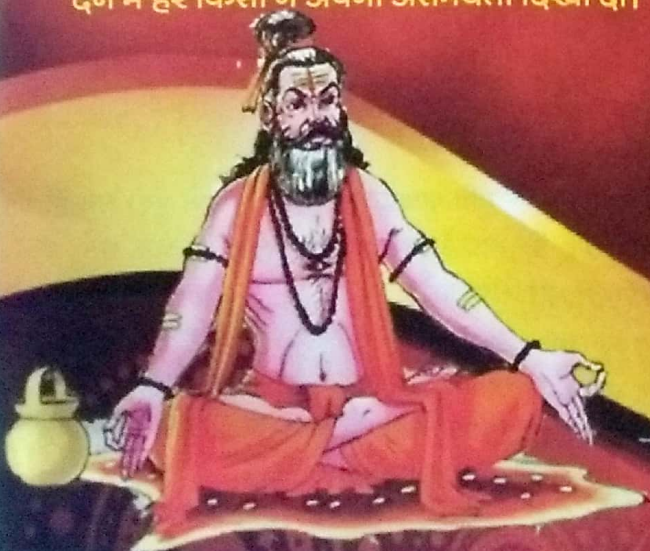
अब वे ब्रह्मर्षि वशिष्ठ के पास पहुँचे और उनसे लक्ष्मी आबद्ध मंत्र की दीक्षा ली और साधना में बैठ गए। ग्यारह दिन तक वे अपने संकल्प को मजबूत करते रहे। योगी का संकल्प बड़ा शक्तिशाली होता है। वह चाहे तो संकल्प मात्र से ब्रह्माण्ड को कम्पायमान कर सकता है। संकल्प और साधना का योग दुःसाध्य कार्य को भी सरलता से सम्पन्न कर सकता है, बस आवश्यकता है कि संकल्प विशुद्ध चक्र से लिया गया हो।

मूलाधार चक्र सिद्ध होने से पृथ्वी पर संबंधित सभी प्रकार के धन, दौलत, वैभव प्राप्त हो जाएगा। लेकिन वह सब भी यहीं रह जाएगा।

स्वाधिष्ठान चक्र के सिद्ध होने पर मूलाधार और स्वाधिष्ठान दोनों चक्रों की जाग्रति के लाभ मिलने लगेंगे। वह सम्पूर्ण जल तत्व पर अधिकार कर लेगा।

अनाहत या नाभि चक्र पर अधिकार प्राप्त करने के बाद साधक सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड, सूर्य, चन्द्र, तारा मण्डल, ग्रह, उपग्रह पर अधिकार प्राप्त कर लेता है। वह इस चक्र के संकल्प मात्र से सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड में हलचल मचा सकता है। जयद्रथ वध के समय भगवान कृष्ण ने कुछ क्षण के लिए संकल्प इसी चक्र से लिया था।

विशुद्ध हृदय चक्र के सिद्ध हो जाने पर साधक सम्पूर्ण जगत का प्रेम जीत लेता है। सारा संसार उसके प्रेम में दीवाना हो जाता है। कृष्ण के पीछे गोपियों का पागल होना इसी चक्र का कमाल था।

विशुद्ध चक्र के सिद्ध होने पर साधक हर अदृश्य वस्तु, देवी-देवता, गन्धर्व, किन्नर, यक्ष, नाग सबको जीत लेता है। इस चक्र से लिए संकल्प से देवी-देवता व्यक्ति के सामने आकर हाथ जोड़कर खड़े हो जाते हैं। विश्वामित्र ने भी लक्ष्मी का संकल्प इसी चक्र से लिया था, जिसमें आज 11 दिन बीत चुके थे।

ठीक 12वें दिन उसके सामने एक आठ साल की कन्या प्रकट हुई।

"तुम कौन हो बेटी?" विश्वामित्र ने पूछा।

"आपने किसका संकल्प लिया था?"

लड़की ने पूछा तो विश्वामित्र चौंके और अपने एक शिष्य को आज्ञा दी - "अरे अर्यमन! जरा रस्सी लाना।"

और जब अर्यमन रस्सी लेकर आया, तो विश्वामित्र ने उसे उस कन्या को बाँधने का आदेश दिया। यह विशुद्ध चक्र से लिए गए संकल्प का ही करिश्मा था, कि लक्ष्मी को विष्णु का पाँव दबाना छोड़ आकाश मण्डल से विश्वामित्र के सामने प्रकट होना पड़ा था।

उधर विष्णु योगनिद्रा से उठे, तो वहाँ लक्ष्मी को अनुपस्थित पाया। नारद को बुलाया गया, परिणामस्वरूप नारद के बताने पर तीनों देव साधु वेश में विश्वामित्र के सामने जाकर हाथ जोड़कर खड़े हो गए। विश्वामित्र तो पहले से ही जानते थे, कि अब त्रिमूर्ति को आना ही पड़ेगा।

विश्वामित्र ने कहा, कि आप सब लोग अपने-अपने असली रूप में आकर दर्शन दें, तब मैं लक्ष्मी को मुक्त करूँगा और वह भी इस वचन के साथ, कि भविष्य में लक्ष्मी मेरा साथ छोड़कर नहीं जाएगी।

तीनों देव अपने असली रूप में आए और उनको दर्शन दें कर, लक्ष्मी को साथ लेकर चले गए।

(मंत्र तंत्र यंत्र विज्ञान से)

लक्ष्मी आबद्ध प्रयोग

लक्ष्मी से संबंधित हजारों विधियां एवं प्रयोग हैं, किन्तु यह प्रयोग अपने आप में सर्वथा विलक्षण हैं। यदि किसी व्यक्ति के घर में लक्ष्मी का आगमन तो धीरे-धीरे हो रहा हो, परंतु गमन हो रहा हो तीव्रता से, तो ऐसी स्थिति में यह प्रयोग अत्यधिक उपयोगी सिद्ध होता है। कहने का तात्पर्य मात्र इतना ही हैं कि व्यय से अधिक आय हो तो जीवन में सर्वत्र आनन्द ही आनन्द है अन्यथा जीवन तो व्यतीत हो ही रहा है। बलपूर्वक बहार लाकर जीवन में उमंग भर देने से पूरी तरह सहायक है यह प्रयोग।

इस प्रयोग में आवश्यक यंत्र हैं, 'लक्ष्मी आवद्ध यंत्र' जो कि पूर्णतः चैतन्य तथा प्राण प्रतिष्ठित हो।

इस यंत्र को कमल पुष्प पर अथवा किसी वस्त्र पर कुंकुम से कमल पुष्प की आकृति बना कर उस पर यंत्र स्थापित करें। फिर मौली (कलावा) से आठ बार यंत्र सहित उस पुष्प अथवा वस्त्र जो आपने यंत्र के नीचे बिछाया है, उसके साथ ही बाँध दें।

तत्पश्चात् निम्न मंत्र का उच्चारण करें –

।।ॐ श्रीं श्रीं महालक्ष्मी आगच्छ आवाहयामि नमः।।

Om Shreem Shreem Mahaalakshmee Aagachchh Aavaahayaami Namah

लक्ष्मी स्वरूपमात्म परं वदेन्यं,
लक्ष्मीर्वतेव वतदं धन-धान्य रूपं।
सत्यं वदाम्यवदवं परमं पवित्रं,
आगच्छ लक्ष्मी मम देहदात्म।।

इसके पश्चात् यंत्र पर दृष्टि एकाग्र करें (त्राटक करते हुए) मन ही मन लक्ष्मी से प्रार्थना करें, कि आप मेरे जीवन में पवित्रता, समृद्धता, धन-धान्य, सुख सौभाग्य ऐश्वर्य और स्थिरता दें।

यह प्रयोग आप 09.1.2018 को करें, उस दिन श्रीयंत्र सिद्ध महाष्टमी है।

यह प्रयोग आप सायं 7 बजकर 36 मिनट से 9 बजे के बीच प्रारंभ करें।

यदि आप इस दिन यह प्रयोग नहीं कर सकें, तो आप किसी भी माह के 'पुष्य योग' में या बुधवार को इसे सम्पन्न कर सकते है।

साधना सामग्री - 450/-

01.01.2018

नववर्ष 2018

मणिभद्र प्रयोग

खेजड़ी की लकड़ी को चन्दन बनाने के लिए किसी प्रकार के विधि-विधान की आवश्यकता नहीं है; आवश्यकता है तो केवल मात्र चन्दन के संपर्क की . . .और चन्दन से सम्पर्कित खेजड़ी की लकड़ी अपनी मान्यताओं, गुण-धर्म के विपरीत चन्दन की तरह सुगंधित हो जाती है . . .चन्दन बन जाती है। यदि चन्दन के समान सुगंधित बनना है, तो प्रतीक्षा करनी होगी उस क्षण की और सम्पन्न करना होगा वह अद्वितीय प्रयोग, जो जीवन को प्रफुल्लित और तरोताजा बना देता है. . .

गुरु तो ज्ञान का वह अगाध सागर है, जो नव निर्माण की शक्ति से परिचित कराता है, क्योंकि वह शक्ति तो तुम्हारे भीतर ही है, जिसे अंधकारवश तुम देख पाने में असमर्थ हो, तुम्हारे अन्दर व्याप्त अंधकार को समाप्त करने के लिए ही तो गुरु 'साधना' रूपी आलोक को प्रदान करते हैं, जिसके प्रकाश में तुम अपनी शक्ति को पहिचान सको।

साधना वह ज्योति है, जो तुम्हारे जीवन को जगमगा देती है। साधना ही वह पुष्प है, जो अपनी मदमाती सुगंध से तुम्हारे जीवन को आनन्दमय बना देती है। साधना ही वह शस्त्र है, जिससे जीवन के हर क्षेत्र में विजयी हुआ जा सकता है और नव निर्माण किया जा सकता है अपने जीवन का।

और तभी तो गुरुदेव द्वारा इस बार प्रदान की जा रही है। यह साधना जिसके द्वारा तुम सभी परिस्थितियों से मुक्त होकर अपने जीवन का नव-निर्माण कर सकोगे।

यह साधना सम्पन्न की जाती है नव वर्ष के प्रथम दिन जब अभिनव पल्लवों का सृजन होता है, कुसुम कलिकाओं का प्रस्फुटन होता है जो प्रारंभ है नव वर्ष का . . .प्रतीक्षारत है प्रत्येक उस क्षण के लिए, जो पूरे जीवन को परिवर्तित करने की क्षमता से युक्त है . . .जिस क्षण विशेष में सम्पन्न किया जाता है 'मणिभद्र प्रयोग', जो अपने पूर्ण तेजस्विता युक्त प्रवाह से जीवन को प्रफुल्लित और तरोताजा बना देता है . . .

'मणिभद्र प्रयोग' नव जीवन की सृजन शक्ति है, जिसे स्थापित करना है अपने हृदय में, प्राणों में, तभी तो मृतवत् अवस्था से मुक्ति संभव हो सकेगी . . .मैं तुम्हारे दुष्कर्मों को मृत्यु प्रदान कर रहा हूँ इस प्रयोग के माध्यम से, जिससे तुम अपना नव निर्माण करने में सक्षम हो सको।

- नव वर्ष के प्रथम दिन अर्थात् दिनाँक 1.1.2018 को सम्पन्न की जाने वाली साधना है यह।
- इस साधना को सम्पन्न करने के लिए आवश्यकता पड़ेगी 'मणिभद्र यंत्र' तथा 'नवमणि माला' की।
  प्रात:काल ब्रह्म मुहूर्त में आप उठें और शय्या पर बैठे हुए ही हाथ जोड़कर सद्गुरुदेव को नमन करें तथा उनसे नव जीवन के लिए मणिभद्र प्रयोग सम्पन्न करने हेतु आशीर्वाद की आकांक्षा व्यक्त करें।
- तत्पश्चात् बिस्तर से उठ कर अपने घर के सभी बड़े सदस्यों को प्रणाम करे। स्नानादि से निवृत्त होकर पीली धोती तथा गुरुपीताम्बर धारण करें।
- साधना कक्ष में पीले आसन पर पूर्व दिशा की ओर मुँह करके बैठें और अपने सामने किसी पात्र में कुंकुम से स्वस्तिक बना कर यंत्र को स्थापित करें। यंत्र के ऊपर ही माला को रखें, फिर यंत्र व माला का पुष्प, अक्षत, धूप एवं दीप से पूजन करें।

पूजन के पश्चात् निम्न मंत्र का नवमणि माला से सात माला मंत्र जप सम्पन्न करें

मंत्र

।। ॐ मणिभद्राय नवसृत्यै ॐ नम:।।

मंत्र जप के पश्चात् माला को पुन: यंत्र पर रखें तथा पुष्प चढ़ाकर अपने जीवन के नव निर्माण की प्रार्थना करें, जिससे कि आपके जीवन में पूरे वर्ष पर्यन्त धन-धान्य, ऐश्वर्य-प्रभुता, राज्य सुख, गृहस्थ सुख, रोग रहित शरीर एवं मानसिक शांति बनी रहे।

- यंत्र माला को किसी पीले कपड़े में लपेट कर नदी या तालाब में विसर्जित कर दें।
- इस प्रयोग को सम्पन्न करने के लिए किसी विशेष पूजा-विधान की आवश्यकता नहीं है या किसी मन्दिर में चढ़ा दें।
- छोटा सा दिखने वाला यह प्रयोग अपने अन्दर इतनी तेजस्विता समेटे हुए है कि जिससे साधक का पूरा जीवन ज्योतिर्मय हो उठता है।

साधना सामग्री (यंत्र, माला) न्यौछावर - 450/-

मुझे अच्छी तरह याद हैं वे दिन, जब मैं किशोर वय बालक ही था। धीरे-धीरे युवावस्था की ओर बढ़ते कदम, पर किशोर में यौवन के आने के प्रति जो उत्साह होता है, उमंग होती है, कुछ कर दिखाने की ललक और जोश होता है, ऐसा कुछ भी नहीं था मेरे अन्दर। बस माता-पिता हैं, इनकी इच्छा है, कि अन्य युवकों की तरह मैं भी कुछ करूँ, पर वह सम्भव नहीं हो पा रहा था।

अकेला, गम्भीर या यों कहूं कि कुछ न कर पाने के कारण हताश, निराश भावना से पीड़ित बस निःश्वास ही था। कभी स्वयं पर झुंझलाहट भी आती, एक प्रकार मैं निरर्थक जीवन ही जी रहा था। कुछ भी करने से पहले सोचता, कि मैं यह कार्य करने में समर्थ भी हूँ या नहीं?

निरन्तर अविश्वास के घेरे में झूलता रहता। आये दिन किसी न किसी बीमारी से, चाहे वह मानसिक हो या शारीरिक ग्रसित ही रहता। मेरे माता-पिता मेरे इस स्वभाव के कारण परेशान रहते तथा मेरे निरन्तर गिरते हुए स्वास्थ्य को देखकर दुःखी भी रहते।

मेरे माता-पिता ने सोचा, कि सम्भव है जलवायु बदलने से स्वास्थ्य में कुछ सुधार आये, इसलिए उन्होंने बद्रीनाथ तथा केदारनाथ जाने का निश्चय किया। यात्रा का कार्यक्रम बना, यात्रा से सम्बन्धित संसाधनों से युक्त हो चल पड़े। वहां के शांत और रमणीय वातावारण से मन आह्लादित हो उठा।

प्रकृति का समग्र रूप सजा और संवरा हुआ था। ऐसा लगता था, कि जीवन के शेष दिन यहीं व्यतीत कर दें। साधु-संन्यासी कई गुफाओं में साधनारत दिखाई दिये। मेरे माता-पिता में धर्म के प्रति अत्यधिक आस्थाभाव है, इसलिए वे प्रत्येक गुफा के सामने खड़े होते हैं और श्रद्धाभाव से सिर झुकाते।

ऐसे ही एक गुफा के समक्ष जब हम गए, तो उसमें रहने वाले संन्यासी बाहर निकले, मैंने अपने जीवन में ऐसा अद्वितीय व्यक्तित्व पहले कभी नहीं देखा था। बाहर आने पर हमने उन्हें प्रणाम किया, उन्होंने मुझे बुलाया और एक फल दे दिया और स्नेह से बोले, कि तुझे भूख लगी होगी, इसे खा ले। यद्यपि ऐसा कुछ भी नहीं था, पर जैसे ही उन्होंने फल दिया, मेरी इच्छा हुई, कि मैं इसे पूरा खा लूं।

उन्होंने मेरे माता-पिता को भी आशीर्वाद दिया और फिर तेज डग भरते हुए, वे देखते-देखते दूर निकल गए। संयोग से अगले दिन वे पुनः दिखाई दिये और उन्होंने मेरे पिताजी को ऐसे पुकारा, जैसे वे जानते हों और संयोग कुछ ऐसा ही था, कि वे किसी समय मेरे पिताजी के साथ ही कॉलेज में पढ़ते थे, पर अचानक एक दिन कॉलेज से गायब हो गए। पिताजी उनके मित्रों में से एक थे और अचानक सोलह-सत्रह वर्ष बाद पुनः मिलना आश्चर्यजनक ही था।

जब मेरे पिताजी ने उनसे मेरे विषय में बताया, तो वे बोले, कि इसे मेरे पास छोड़ कर जाओ और शाम को मैं स्वयं तुम्हारे पास पहुँचा दूँगा।

उन लोगों के जाने के बाद उन्होंने मुझसे बातें करनी आरम्भ की। मैंने इतनी तेजस्विता और ओजस्विता को देखकर बहुत धीरे से कहा, कि आप मुझे साधनाओं के बारे में बताइये। उन्होंने मुझे देखा और बताने लगे, कि साधना करने के लिए भी तो शक्ति की आवश्यकता होती है। साधक में यह प्रमुख गुण होना आवश्यक है, कि उसका व्यक्तित्व प्रखर हो तथा वह दृढ़विश्वास और दृढ़निश्चय से युक्त हो, कि जो कुछ सोच लिया, फिर उसे कर ही देना है, संकल्प के साथ फिर विजय प्राप्त कर ही लेनी है।

मैंने अनायास ही पूछ लिया, कि क्या किसी साधना के माध्यम से इसे प्राप्त किया जा सकता है? उन्होंने उत्तर दिया, कि हाँ! अवश्य और इस प्रकार की शक्ति, तेजस्विता और प्रखरता की प्राप्ति मात्र सूर्य गायत्री साधना से ही सम्भव है।

जब भी प्रखरता और तेजस्विता की बात होती है, तो एकमात्र सूर्य ही ऐसे देव हैं, जिनके समक्ष सभी नतमस्तक हैं। सूर्य ही समस्त चराचर जगत में प्राणों का संचार करते हैं। सूर्य की साधना सम्पन्न करने से साधक के व्यक्तित्व में स्वत: ही परिवर्तन आने लगता है और उसके अन्दर अडिगता तथा दृढ़संकल्प जैसे गुणों का समावेश होने लगता है, वह रोगों से मुक्त हो जाता है और एक अद्वितीय तेजस्विता साधक की देह में समाहित होकर समस्त विषम परिस्थितियों को समाप्त कर देती है।

भगवती गायत्री तो उस परम शक्ति का ही एक स्वरूप है, अत: भगवती गायत्री की साधना से साधक बलशाली हो जाता है। साधक के जीवन में शक्ति साधना की अनिवार्यता से कौन असहमत हो सकता है? बिना शक्ति के न तो आध्यात्मिक क्षेत्र में उच्चता प्राप्त की जा सकती है और न ही भौतिक क्षेत्र में व्यक्ति कुछ करने में समर्थ हो सकता है।

यही इस साधना का विशेष पक्ष है, जिसके माध्यम से वह सब कुछ पाया जा सकता है, जिसे जीवन कहते हैं।

यह साधना मात्र संक्रान्ति के अवसर पर ही सम्पन्न की जाती है, जब सूर्य एक राशि से दूसरी राशि में प्रवेश करता है, पर इसका सर्वश्रेष्ठ दिवस है मकर संक्रान्ति, जब सूर्य दक्षिणायन से उत्तरायण में प्रविष्ट होता है।

साधनाओं को समय, शुभ मुहूर्त, योग, तिथि तथा दिवस के अनुसार किया जाय, तो फिर सफलता में संशयात्मक स्थिति आ ही नहीं सकती, क्योंकि ये सभी मिलकर एक विशेष अनुकूलता प्रदान करते हैं और साधक यदि ऐसे क्षणों में चूके बिना साधना सम्पन्न करता है, तो फिर वह असफल हो ही नहीं सकता।

और यही वह साधना है, जो उन्होंने मुझे सम्पन्न कराई थी और जिसके माध्यम से मेरे व्यक्तित्व तथा मेरे जीवन में जो परिवर्तन आया, उसे देखकर मैं स्वयं आश्चर्यचकित रह गया।

साधना विधान

- इस साधना में आवश्यक सामग्री–'सूर्य गायत्री सिद्ध यंत्र', 'आदित्य सिद्धि गुटिका' तथा 'सफेद हकीक माला'।
- यह साधना मकर संक्रान्ति के अवसर पर सम्पन्न करें, ऐसा सम्भव न होने पर इसे किसी भी संक्रान्ति पर सम्पन्न किया जा सकता है।
- यह एक दिवसीय साधना है तथा इसे 14.01.18 मकर संक्रान्ति के दिन प्रात: 5 बजे से 8 बजे के मध्य ही सम्पन्न करें।
- लकड़ी के बाजोट पर सफेद वस्त्र बिछाकर उस पर केसर से सूर्य की आकृति बनायें तथा उस पर सूर्य गायत्री यंत्र का स्थापन करें। यदि आपके पास वेद हों, तो उनको भी स्थापित कर दें। यंत्र की दाहिनी ओर लाल रंग से रंगे चावल के दानों पर आदित्य सिद्धि गुटिका स्थापित कर दें।
- यंत्र का पूजन केसर, पुष्प तथा अक्षत से करें, इसी प्रकार गुटिका का भी पूजन कर घी का दीपक एवं सुगन्धित अगरबत्ती लगायें।
- दोनों हाथ जोड़ कर सूर्य भगवान का ध्यान करें–

ॐ आकृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यं च। हिरण्ये सवितारथेन याति भुवनानि पश्यन्।।

- फिर सूर्य मंत्र का एक माला मंत्र जप करें–

मंत्र

ॐ ह्रीं घृणि: सूर्याय नम:।।

- फिर उसी माला से गायत्री मंत्र का एक माला मंत्र जप करें–

मंत्र

।। ॐ भूर्भुव: स्व: तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गोदेवस्य धीमहि धियो योन: प्रचोदयात्।।

- फिर सूर्य गायत्री मंत्र का ग्यारह माला मंत्र जप करें–

मंत्र

।। ॐ आदित्याय विद्महे मार्तण्डाय धीमहि तन्न: सूर्य: प्रचोदयात्।।

- पुन: एक माला गायत्री मंत्र का तथा एक माला सूर्य मंत्र का जप करें।

  उसी दिन शाम को ही समस्त सामग्री जल में प्रवाहित कर दें।

- निश्चय ही यह साधना साधक के जीवन में अद्वितीय परितवर्तन के लिए उपादेय है, जिसे वह स्वयं ही साधना के अनन्तर अनुभव कर सकेगा। यदि साधक किसी भी साधना को एकाग्रचित्त भाव से सम्पन्न करें, तो उसे प्रतिफल की अनुभूति होती ही है।

–न्यौछावर 450/

कपूर की तरह ही उड़ जाते हैं
संकट, भय, बाधा, कष्ट, पीड़ा, अभाव और दारिद्र्य

जिस प्रकार दिन के बाद रात और रात के बाद दिन आता है, उसी प्रकार मनुष्य का जीवन भी सुख-दुःख, आनन्द-विषाद, जन्म-मृत्यु के चक्रव्यूह में बंधा है, जहां पल में प्रसन्नता का आवेग है, तो रुदन के क्षण भी; पर जो इन क्षणों को पूर्णता के साथ जी लेता है, जो अपने कष्टों का, पीड़ा का, अभावों का और दारिद्र्य का मुकाबला बड़े ही हिम्मत, जोश और मस्ती के साथ कर लेता है, वही पूर्ण मानव कहलाता है।

मनुष्य होना कोई बड़ी उपलब्धि नहीं है, पर मनुष्य बनना, मुसीबतों से जूझते हुए, बाधाओं को पार करते हुए आगे बढ़ जाना, अपने जीवन को अधोगामी से ऊर्ध्वगामी बना देना, नर से नारायण बना देना ही जीवन की श्रेष्ठता है।

प्रत्येक के जीवन में दुःख आते हैं, संकट आते हैं, क्योंकि संकट दस्तक देकर मनुष्य के जीवन में नहीं आता, वह तो अचानक ही आ जाता है, ऐसी स्थिति में मनुष्य दुविधाग्रस्त हो जाता है। जीवन तो पल-प्रतिपल संकटों से घिरा हुआ है ही, परन्तु इन संकटों का निवारण कर लेने की क्षमता प्रत्येक में नहीं होती, ये संकट तो मनुष्य को स्वयं ही झेलने पड़ते हैं, क्योंकि संकट के समय सभी रिश्तेदार, बन्धु-बान्धव यहां तक कि पति-पत्नी, पुत्र-पुत्री भी काम नहीं आते, ये सब तो सुख के साथी हैं और दुःख में तो अपने भी पराये ही हो जाते हैं, वस्तुतः मनुष्य को स्वयं ही जूझना पड़ता है।

संकष्टी साधना

जो पूरे वर्ष को सुरभित, सुगंधित एवं माधुर्य से ओत-प्रोत कर देती है

हमारे ऋषि, हमारे पूर्वज इस तथ्य को पहले से ही जानते थे, कि आने वाली पीढ़ी, आने वाला युग ऐसा होगा इसीलिए उन्होंने अपने अजस्र ज्ञान के प्रवाह से कुछ ऐसे तथ्य स्पष्ट किये, जिससे लाभ उठाकर मनुष्य अपने जीवन में श्रेष्ठता प्राप्त कर सकता है, अद्वितीयता प्राप्त कर सकता है, दिव्यता प्राप्त कर सकता है।

घोर संक्रमण के इस काल में मानव दिग्भ्रमित हो जाता है, जिनमें संघर्ष करने की क्षमता नहीं होती, जो चुनौतियों से विचलित हो जाते हैं, वे ही हारते हैं... और जब ऐसा होता है, तो उनमें जीने की ललक, लालसा नहीं रह जाती . . . परंतु तुम्हें तो अपने परिवार और समाज को त्याज्य नहीं करना है, क्योंकि पलायन करना कायरता है, तुम्हें तो उनके बीच रहकर प्रसन्नता और मस्ती के साथ उन चुनौतियों, उन संकटों का सामना करना है और अपनी हार को विजय में बदल देना है।

जीवन में तो बाधाएं आयेंगी ही और यह तो जीवन का एक सौभाग्य ही है, कि तुम्हें बार-बार अपने आपको परखने का मौका मिल जाता है, इस प्रकार की स्थिति आने पर तुम अपने आपको तौल सकते हो, कि तुममें विपत्तियों का सामना करने का कितना दमखम है अथवा आकस्मिक घटित घटनाओं को झेलने की कितनी अधिक क्षमता है।

तुम्हें तो पलायन की अपेक्षा मुस्कराकर खड़े होना है, विपत्तियों से घबराकर विचलित होने की अपेक्षा अपने आप को जीवन्त और सजग बनाये रखना है, यही तुम्हारी कसौटी है और यही तुम्हारी कर्मशाला का पहला अभ्यास होगा, जब तुम कुछ कर सकने में सक्षम हो सकोगे।

पर कभी-कभी ऐसा लगता है, कि तुम मानसिक रूप से कुंद होते जा रहे हो और तुम्हारी मानसिकता पर ये समस्याएं हावी होती जा रही है, इसीलिए तुम अपने आपको अशक्त और अक्षम पाते हो, तुम्हें तो अपनी मानसिक वृत्तियों को समेट कर वीर बनना है और मन में यह विश्वास पैदा करना है, कि मैं जो चाहूं कर सकता हूँ, यहां तक कि अपने प्रारब्ध को भी बदल सकता हूँ, मैं साधना सम्पन्न कर जीवन को पूर्णता दे सकता हूँ।

तुम्हें पुरुषार्थी बनना है और पुरुषार्थ के द्वारा ही अपने रास्ते का निर्माण करना है। विपत्तियों का सामना कर निर्विकार भाव से आगे बढ़ते चले जाना है। इस प्रकार का रास्ता सौभाग्यशाली ही प्राप्त कर सकते हैं . . .जब तुम साधना के मार्ग पर बढ़ोगे, तो तुम्हारे जीवन का अंधकार पक्ष उजाले पक्ष में परिवर्तित हो जायेगा, मानो काले बादल छंट जाने के बाद भोर का स्वर्णिम प्रभात विजय-माला लिये तुम्हारी प्रतीक्षा कर रहा हो।

जीवन में तीन प्रकार के संकट ही मानव को संत्रस्त एवं विक्षिप्त कर देते हैं –

1. भौतिक, 2. दैहिक, 3. दैविक

भौतिक – जो मनुष्य को मानसिक संताप से पीड़ित कर देते हैं, जैसे –

1. सुयोग्य पति या पत्नी का न मिलना।
2. योग्य पुत्र या पुत्री का न होना।
3. धन का अभाव।
4. नौकरी न मिलना।
5. अशांत वातावरण होना।
6. व्यापार में वृद्धि न होना।
7. शत्रु बाधा।

दैहिक संकट – दैहिक का अर्थ है, देह से संबंधित दुःख जैसे –

1. सर्प दंश, 2. एक्सिडेंट हो जाना, 3. रोग ग्रस्त हो जाना, 4. अंग-भंग हो जाना, 5. पागलपन, 6. जर्जरता आना, 7. पशुभय

दैविक संकट – दैविक का अर्थ है, परा जगत से संबंधित बाधाएं, जिनके पीछे बहुत ही सूक्ष्म कारण छिपे होते हैं, जैसे – 1. भूत प्रेत बाधा, 2. पितृ दोष, 3. गृह बाधा, 4. ग्रह दोष, 5. अकाल मृत्यु, 6. आकस्मिक दुर्घटना, 7. तंत्र बाधा दोष, 8. देव रुष्टता।

अब प्रश्न उठता यह है, कि क्या इसका कोई विकल्प है? क्या ऐसा कोई उपाय है, जिसके द्वारा इन संकटों से बचा जा सके और पूर्ण आनन्दमय, रसमय जीवन जी सकें।

इन बाधाओं, विपत्तियों से मनुष्य को आगाह किया जा सकता है और इन पर विजय भी प्राप्त की जा सकती है; मनुष्य में यदि धैर्य, दृढ़ता उत्साह, चेतना और बल है तो। उच्चकोटि के ऋषियों और संन्यासियों ने इन संकटों के आघात से बचने के लिए ही "संकष्टी साधना" को अपने जीवन में विशेष महत्व दिया। इन भौतिक, दैहिक और दैविक प्रकोपों से निजात पाने का एकमात्र क्षण है, "संकष्टी पर्व" पूरे वर्षभर में मात्र एक दिन ऐसा अवश्य आता है, जब व्यक्ति उस क्षण की महत्ता को पहिचान कर, अपने जीवन में आये संकट को दूर कर नीरसता के जीवन का त्याग कर सकता है।

यदि इस पर्व पर साधक "संकष्टी साधना" को सम्पन्न कर ले, तो वह उसके लिए एक सौभाग्यदायक क्षण होगा, क्योंकि संकष्टी साधना एक ऐसा सशक्त और सक्षम माध्यम है, जिसके द्वारा जीवन में आई रुकावटों को, आपदाओं और विपदाओं को दूर किया जा सकता है, प्रत्येक शुभ कार्य को सफलता प्रदान की जा सकती है और एक सफल गृहस्थ जीवन का निर्माण किया जा सकता है।

1. जीवन में उन्नति के मार्ग पर प्रशस्त होने और संकटों को हरण करने वाला है मंत्र सिद्ध चैतन्य 'संकष्टी यंत्र' और बाधा निवारण हेतु पूर्णा माला।'
2. यह एक दिवसीय साधना 5/1/2018 को की जायेगी अथवा किसी भी बुधवार को इसे सम्पन्न कर सकते हैं।
3. यह साधना प्रातः काल ब्रह्म मुहूर्त में 5 से 8 बजे के मध्य सम्पन्न करें।
4. इसमें पूर्व दिशा की ओर मुख करके बैठें।
5. स्वच्छ पीले वस्त्र धारण करें व पीले आसन का ही प्रयोग करें।
6. सबसे पहले बाजोट पर नया सफेद आसन बिछा कर गुरु चित्र को स्थापित करें तथा गुरु पूजन सम्पन्न करें, फिर भगवान गणपति का स्मरण करें।
7. फिर एक ताँबे की प्लेट पर 'स्वस्तिक' का चिन्ह बना दें तथा यंत्र को शुद्ध जल से स्नान कराकर स्थापित कर दें।
8. फिर यंत्र का कुंकुम, अक्षत व पुष्प से पूर्ण भक्ति भावना से पूजन करें।
9. पूर्णा माला से निम्न मंत्र का 21 माला जप करें-

मंत्र

॥ ॐ ऐं क्लीं सर्व संकटनाशाय क्लीं ऐं फट्॥

10. मंत्र जप के पश्चात् उपरोक्त मंत्र से 29 बार आहुति दे कर छोटा सा हवन करें और हवन सामग्री के साथ काली मिर्च, काली सरसों और लौंग को मिला लें, जिससे कि साधक के जीवन में आने वाले भौतिक, दैहिक व दैविक संकटों की निवृत्ति हो सके।
11. फिर यंत्र के आगे हाथ जोड़कर श्रद्धापूर्वक नमन करें और हो सके, तो गुरुदेव से फोन पर या अन्य किसी भी माध्यम से सम्पर्क स्थापित कर आशीर्वाद प्राप्त करें।
12. पूजन सामग्री यंत्र एवं माला को एक माह के पश्चात् किसी नदी या कुएं में प्रवाहित कर दें या किसी मन्दिर में रख दें।
13. पूरे साधना काल में दीपक प्रज्वलित रहना चाहिए। यह साधना वास्तव में समस्त विघ्नों की नाशक है, जो मानव जीवन के भौतिक, दैहिक सभी प्रकार के परितापों से मुक्ति प्रदान करने वाली साधना है।

- न्यौछावर - 450/-

नारायण मंत्र साधना विज्ञान
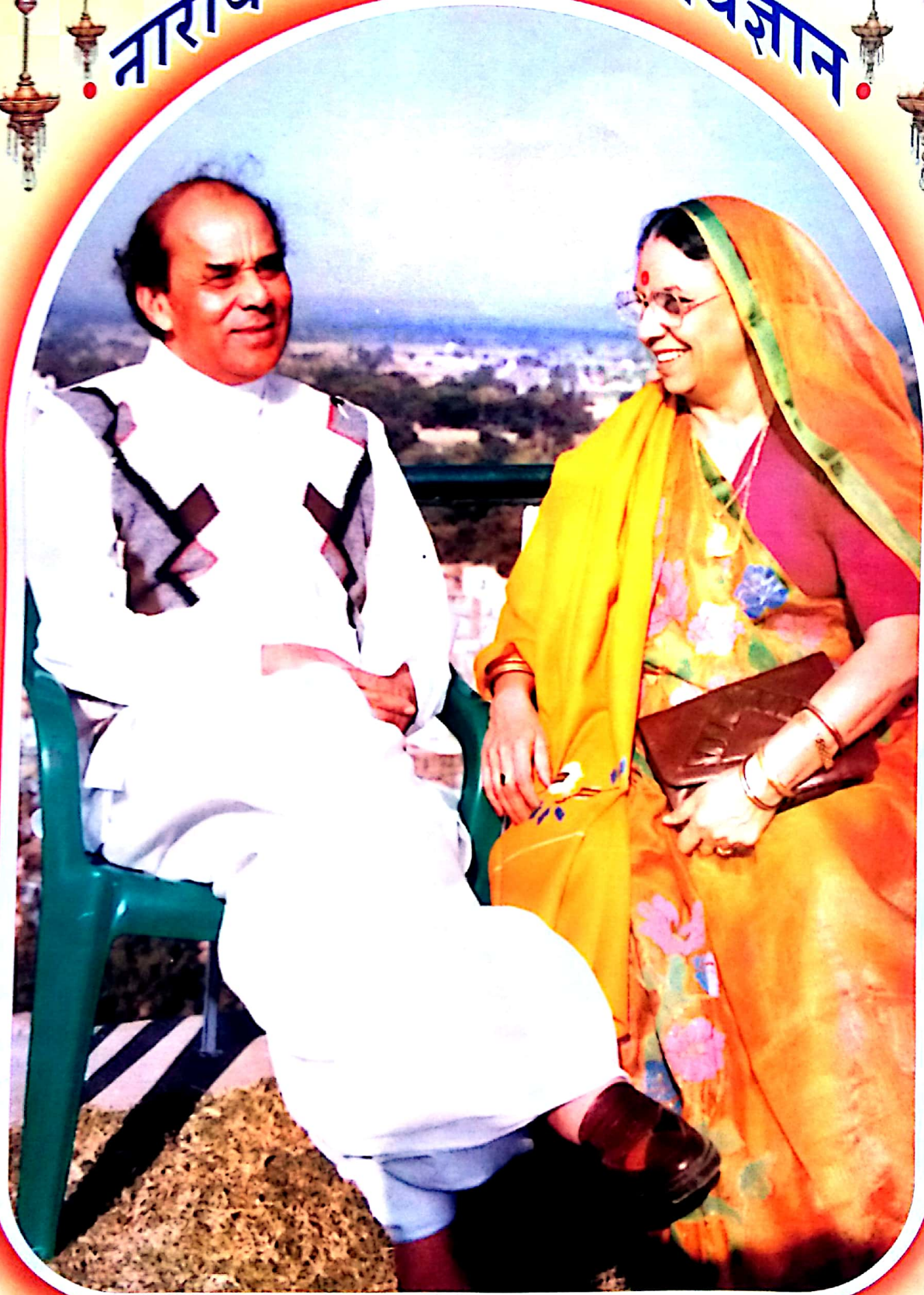
शक्तिस्वरूप माँ भगवती–नारायण

करुणा एवं ममत्व जिनके रोम–रोम में बसा था

प्रेत बाधा निवारण हेतु गोरखनाथ कृत प्रयोग

नाथ साहित्य में पन्द्रहिया, चौबीसा, बीसा, छत्तीसा जैसे यंत्रों के उपयोग से तो आप सभी भली-भांति परिचित हैं किन्तु उन्हीं नाथ योगियों के द्वारा प्राप्त किया गया एक अन्य महत्वपूर्ण यंत्र है सत्रहिया यंत्र। यह यंत्र इसी प्रकार की समस्याओं के लिए अत्यंत उपयोगी पाया गया है और श्मशान आदि स्थानों पर उग्र साधना करते समय नाथ योगी इसी प्रकार के विभिन्न यंत्रों के माध्यम से समस्त वातावरण को पूरे-पूरे श्मशान को अपने वशीभूत कर लेते थे।

साधक को चाहिए कि वह ताम्रपात्र पर अंकित ऐसे यंत्र को प्राप्त कर शनिवार की रात्रि में साधना में बैठे। यदि पीड़ित व्यक्ति उसके सामने बैठ सके तो उसे भी बैठा लें, नहीं तो उसकी अनुपस्थिति में यह प्रयोग उसके नाम का संकल्प लेकर किया जा सकता है। विशेषकर ऐसी स्थिति में जहां प्रयोग के बीच में पीड़ित व्यक्ति के उग्र हो जाने की संभावना हो, उसे सामने नहीं बैठाना चाहिए।

रात के दस बजे के बाद काले वस्त्र पहन कर, पश्चिममुख हो, काले वस्त्र पर तिलों की ढेरी स्थापित करे और उस पर ताम्र पत्र पर अंकित सत्रहिया यंत्र स्थापित करें। स्वयं भी काले ऊनी आसन पर बैठें। साधना से पूर्व भगवान भैरव का स्मरण कर भैरव गुटिका को स्थापित करें फिर गुड़ की ढेली का भोग लगाएं और उनसे रक्षा की प्रार्थना कर समस्त दिशाओं से बाधा निवारण हेतु निम्न मंत्र बोलते हुए अपने चारों ओर जल छिड़के -

अपसर्पन्तु ते भूता ये भूता भूमि संस्थिता:।
ये भूता विघ्नकर्तारस्ते नश्यन्तु शिवाज्ञया।।

अंतरिक्ष से विघ्न निवारण हेतु ऊपर की ओर देखते हुए 'फट' मंत्र उच्चारित करें तथा भूमि से होने वाले विघ्नों का नाश करने के लिए बाएं पैर की एड़ी से पृथ्वी पर आघात करें। तदुपरान्त लोबान धूप जला लें और एक सिद्ध रक्षा चक्र हाथ में लेकर पीड़ित व्यक्ति के नाम से संकल्प करें कि मैं अमुक नाम, अमुक गोत्र का साधक, अमुक गुरु का शिष्य, अमुक व्यक्ति को प्रेत बाधा से मुक्त कराने के लिए अपने पूज्य गुरुदेव, पूर्वजों एवं पितरों की उपस्थिति में यह प्रयोग सम्पन्न कर रहा हूँ। वे अपने सूक्ष्म बल द्वारा इसमें सफलता दें। ऐसा कहकर सिद्ध रक्षा चक्र को यंत्र के सामने स्थापित कर दें और एक पात्र में जल रखकर, तेल का बड़ा दीपक लगाकर, काले हकीक की माला से निम्न मंत्र की पांच माला मंत्र जप करें।

मंत्र

।।ॐ ह्रीं ह्रीं क्रीं क्रीं फट्।।

ध्यान रखें कि बिना पांच माला मंत्र जप किए आसन को नहीं छोड़ना है। यदि इस बीच में कोई हलचल हो, भय उत्पन्न हो, आहट आए तब भी साधक मंत्र जप का क्रम बनाए रखें, किन्तु मंत्र जप के काल में यदि कोई आकृति स्पष्ट दिखाई दे जाए तो बिना किसी हिचकिचाहट या विलम्ब किये मंत्र जप को स्थगित कर सामने रखे पात्र से जल लेकर उस पर छींटें मारें। ऐसा करने से यह प्रयोग पूर्णतया सिद्ध हो जाता है।

मंत्र जप के उपरांत साधक शेष जल पीड़ित व्यक्ति को पिला दें और यदि व्यक्ति इसमें कोई बाधा उत्पन्न करें तो उसके शरीर पर छिड़क दें। इस क्रिया से वह प्रेत बाधा से ग्रसित व्यक्ति अत्यंत क्रोधित और उग्र हो सकता है, किन्तु चिंतित न हों, इसके बाद साधक को जब भी अवसर मिले प्रेत बाधा से ग्रसित व्यक्ति के बाएं हाथ में सिद्ध रक्षा चक्र धारण करा दें। अधिकांश स्थितियों में दूसरे ही दिन से पीड़ित व्यक्ति की उग्रता में कमी आने लग जाती है।

साधना के उपरांत काले हकीक की माला, सत्रहिया यंत्र एवं अन्य पूजन सामग्री किसी काले वस्त्र में बांधकर विसर्जित कर दें।

साधना सामग्री - 600/-